17

लोह्ड़ी

पर्व	उत्सव	त्योहार	राष्ट्रीय	ओणम
प्रसिद्ध	नवरेह	संबंधित	खपची	समृद्धि
पूर्वज	लोक–कथा	उत्साह	कामना	आकार

भारत में तरह–तरह के उत्सव या त्योहार मनाए जाते हैं। कुछ त्योहार ऋतुओं से संबंधित हैं। जैसे वसंत। कुछ त्योहार महापुरुषों की याद में मनाए जाते हैं, जैसे दशहरा, रामनवमी और गांधी जयंती। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं। ऋतुओं से संबंधित त्योहारों में 'बिहू' तथा 'ओणम' बहुत प्रसिद्ध हैं। "बिहू" पूर्व भारत में मनाया जाता है, जबकि "ओणम" दक्षिण भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। उत्तर भारत में बैसाखी, नवरेह, नवरोज़, होली, दीवाली, लोह्ड़ी आदि प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। जो भी हो हर त्योहार मिल–जुलकर और खुशी–खुशी मनाया जाता है। लोह्ड़ी विशेषकर दिल्ली, पंजाब और जम्मू क्षेत्र में मनाई जाती है। जम्मू और पंजाब में लोह्ड़ी से कुछ दिन पहले लड़के–लड़कियाँ घर–घर जाते हैं और लोह्ड़ी माँगते हैं। लोह्ड़ी के दिन, रात को लोग आग जलाकर उसके गिर्द भाँगड़ा और गिद्दा नाचते हैं। जम्मू क्षेत्र में इस अवसर पर गोलाकार 'छजजे' बनाने की प्रथा है। लड़के एक–दो सप्ताह पहले से ही छजजे बनाने में जुट

जाते हैं। ये 'छज्जे' बड़े सुंदर होते हैं। मोर के फैले हुए पंखों के आकार का 'छजजा' बाँस की खपचियों और रंगबिरंगें कागज़ों से बनता है, जिस पर कागज के फूल, पत्तियाँ आदि बनाकर लगाए जाते हैं। छजजे पर, नीचे मोर का चित्र बना होता है। जब लड़के इन्हें कँधों पर उठाकर चलते हैं तो लगता है जैसे मोर अपने पंख फैलाए सड़कों और गलियों में जा रहे हों। घरों में ले जाकर कुछ लड़के छजजों को घुमाते और नचाते हैं जबकि अन्य लड़के ढोलिये के ढोल की ताल पर "डंडारस–नृत्य"

करते हैं। छोटे बच्चे तिकोने छजजे लेकर अलग टोलियाँ बनाकर घूमते हैं।

लोह्ड़ी के दिन लोग नए वस्त्र पहनते हैं। छोटे बच्चों के गलों में सूखे मेवों के हार पहनाए जाते हैं। सायंकाल 'लोह्ड़ी जलाने' से पहले ज़मीन को जल से धोया जाता है फिर धुली साफ़ ज़मीन पर लकड़ियों को एक दूसरे से टिका कर खड़े आकार में रखते हैं। इस प्रकार लकड़ियों का पिरामिड (खड़ा तिकोन) सा बनता है। फिर इस में आग दी जाती है।

घर के सदस्य आग के गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं और भक्ति–भाव के साथ सूखे मेवे, चिउड़े, रेवड़ियाँ, फुल्ले (मक्की) आदि की आहुतियाँ अग्नि में डालते हैं। सबकी सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। तिल–भुग्गा, रेवड़ियाँ, मूँगफली, चिउड़ा, गजक तथा सूखे मेवे आदि को मित्रों और संबंधियों में बांटकर खाते हैं। तिल की रेवड़ी के प्रयोग के कारण इस त्यौहार को "तिलोड़ी" भी कहते हैं।

लोह्ड़ी का पर्व सर्दियाँ समाप्त होने का संदेश देता है। यह पौष मास के अंतिम दिन मनाते हैं। विश्वास है कि हमारे पूर्वजों ने सर्दी से बचने के लिए एक मंत्र की रचना की थी। इस दिन वह मंत्र बोलकर सूर्य भगवान से प्रार्थना की जाती है कि वे हमारे लिए गर्मी भेजें।

जिस घर में शिशु जन्मा हो या नई शादी हुई हो उसमें लड़के–लड़कियों की मंडलियाँ 'लोह्ड़ी मांगते' समय प्रायः यह गीत गाते हैं:–

सुंदर मुंदरिये, हो

तेरा कौन प्यारा, हो

दुल्ला भट्टी वाला, हो

दुल्ले धी ब्याही हो

.....

.....

लोह्ड़ी का यह गीत 'दुल्ला भट्टी' की लोक–कथा से जुड़ा है। लोक–कथा में दुल्ला – भट्टी नामक एक आदमी सुंदरी–मुंदरी नामक दो बहनों को किसी अत्याचारी से बचाता है और उन्हें अपनी बेटियाँ बनाकर विवाह कर देता है। लोह्ड़ी के अवसर पर यह गीत गाकर लोग एक दूसरे को बहन–बेटियों की रक्षा करने की याद दिलाते हैं।

हमें लोह्ड़ी जैसे उत्सवों को सदा उत्साह से मनाना चाहिए। इस से आनंद मिलता है और आपसी भाई–चारा भी बढ़ता है।

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

क) लोह्ड़ी का उत्सव कहाँ–कहाँ मनाया जाता है ?

.....

ख) भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं तीन त्योहारों के नाम लिखें :–

1. ..... 2. ..... 3. .....

ग) लोह्ड़ी के अवसर पर युवक कौन से नृत्य करते हैं ?

.....

घ) लोह्ड़ी का त्योहार कब मनाया जाता है ?

.....

च) लोह्ड़ी को त्योहार क्या संदेश देता है ?

.....

छ) लोह्ड़ी को तिलोड़ी क्यों कहा जाता हैं ?

.....

ज) दुल्ला भट्टी का गीत लोगों को क्या याद दिलाता है ?

.....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :

उत्साह, पर्व, सर्दियों, छजजे, प्रथा, समृद्धि।

1. लोह्ड़ी का ..... उत्तर भारत में मनाया जाता है।
2. भारत में अनेक त्योहार बड़े ..... से मनाए जाते हैं।
3. अग्नि जलाकर सबकी ..... की कामना करते हैं।
4. जम्मू क्षेत्र में ..... बनाने की प्रथा है।
5. लोह्ड़ी का त्योहार ..... की समाप्ति का सूचक है।

उद्देश्यः– सही शब्दों से वाक्यपूर्ति।

3. पढ़ें, समझें और लिखें :

पर्व	त्योहार	ऋतु	मौसम
समूह	.....	जल	.....
ताप	.....	दिवस	.....
मंडली	.....	शीत	.....

सायं ..... अग्नि .....

उद्देश्य – समानार्थक शब्द–ज्ञान।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :

क) महापुरुष – महा + पुरुष, महाभारत – महा + भारत

....

महाकाल – महा + काल, महाकाव्य – महा + काव्य

....

महाजन – महा + जन, महामूर्ख – महा + मूर्ख

....

महाबली – महा + बली, महापंडित – महा + पंडित

....

उद्देश्य – "महा" उपसर्ग से शब्द रचना करना।

ख) पढ़ें, समझें और लिखें :

राष्ट्र + इर्य – राष्ट्रीय, स्थान + ईय – स्थानीय

....

भारत + ईय – भारतीय, क्षेत्र + इर्य – क्षेत्रीय

....

कोण + ईय – कोणीय मानव + ईय – मानवीय

....

दिवस + ईय – दिवसीय जाति + ईय – जातीय

....

उद्देश्यः–"ईय" प्रत्यय से शब्द–रचना करना।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :

सर्दियाँ	–	गर्मियाँ	आरंभ	समाप्त
.....		.....	.....	.....
सुख	–	दुख	जन्म	मृत्यु
.....		.....	.....	.....
सायंकाल	–	प्रातःकाल	जलाना	बुझाना
.....		.....	.....	.....
प्रथम	–	अंतिम	लेना	देना
.....		.....	.....	.....

उद्देश्यः– विलोम शब्दों की पहचान।

6. "क" स्तंभ का शब्द "ख" तथा "ग" स्तंभों के सही वाक्यांशों से मिला कर सही वाक्य बनाकर लिखें :–

क	ख	ग
	के अवसर पर लड़के	उत्साह से मनाना चाहिए।
लोहड़ी	का त्योहार सर्दियां जैसे उत्सवों को के दिन लोग उत्तर भारत में	समाप्त होने का संदेश देता है। मनाया जाने वाला त्योहार है। नए वस्त्र पहनते हैं। डंडारस नृत्य करते हैं।
.....	.....	.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– शुद्ध वाक्य रचना करना।

7. श्रतुलेख :–

सर्दियाँ, समाप्ति, पौष, पूर्वजों, मंत्र, दक्षिण, पूर्व, उत्सव, क्षेत्र, डंडारस–नृत्य, सुख–समृद्धि, अत्याचारी, भाईचारा।

उद्देश्य – शुद्ध श्रवण व लेखन अभ्यास।

8. अपने क्षेत्र के किसी अन्य त्योहार पर दस वाक्य लिखें :–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– योग्यता विस्तार।

शब्दार्थ :–

पर्व	–	उत्सव, त्योहार
ऋतु	–	मौसम
राष्ट्रीय	–	राष्ट्र का
प्रथा	–	रीति–रिवाज़
क्षेत्र	–	इलाका
तिकोन	–	तीन कोण वाला
समृद्धि	–	धन–दौलत, संपत्ति
पूर्वज	–	बाप–दादा, पुरखे
भाईचारा	–	भाई जैसा व्यवहार
लोककथा	–	लोगों में प्रचलित कथा, जनश्रुति
आहुति	–	मंत्र के साथ अग्नि में घी, फल–फूल आदि डालना
डंडारस	–	हाथों में छोटे–छोटे डंडे लेकर किया जाने वाला एक नृत्य

उद्देश्य :– शब्दार्थ–परिचय।